महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्तशासी संस्था)

Maharshi Ṣandipani Rashtriya Vedavidya Pratishthan, Ujjain

(An autonomous organisation under Ministry of Education, Govt. of India)

राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं एवं गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों में वेद विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं मानसिक सुअवस्था तथा छात्र सहायता व्यवस्थाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु उपायों संबंधी दिशा-निर्देश

GUIDELINES PERTAINING TO MEASURES FOR EMOTIONAL AND MENTAL WELLBEING OF VEDA STUDENTS AND STRENGTHENING OF STUDENT SUPPORT MECHANISMS IN RAVVs/VEDA PATHSHALAS/GSP UNITS

क. प्रतिक्रियात्मक व्यवस्था के स्थान पर निवारक सुअवस्था प्रतिरूप को अपनाना

A. Shift from Reactive to Preventive Wellbeing Model

क.१ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, संबद्ध वेद पाठशालाओं तथा संबद्ध गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा एक निवारक, समुदाय आधारित एवं छात्र केंद्रित संस्कृति विकसित करने का प्रयास किया जाएगा, जिसमें शैक्षणिक अध्यापन, छात्रावासीय जीवन, मार्गदर्शन (मेंटॉरिंग), परामर्श, शारीरिक स्वास्थ्य, योगाधारित अभ्यासों तथा सहपाठी सहयोग तंत्र का समावेश हो। भारतीय ज्ञान परम्परा के समग्र दृष्टिकोण के अनुरूप, किसी समस्या अथवा घटना के घटित होने के उपरांत की जाने वाली कार्रवाई की अपेक्षा विद्यार्थियों के साथ सतत संवाद, समस्याओं की प्रारम्भिक पहचान तथा समयोचित सहयोग करने पर बल दिया जाए।

A.1 The Rashtriya Adarsh Veda Vidyalayas, the affiliated Veda Pathshalas and the affiliated Guru-Shishya Parampara Units shall endeavour to institutionalize a preventive, community based and student centric culture integrating academic instruction, hostel life, mentoring, counselling, physical wellbeing, yoga-based practices and peer support systems. In consonance with the holistic approach of the Bharatiya Jnana Parampara, the emphasis shall be on continuous engagement, early identification of concerns and timely support rather than incident driven interventions.

क.२ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, संबद्ध वेद पाठशालाओं तथा संबद्ध गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा ऐसा वातावरण विकसित करने का प्रयास किया जाए, जो विद्या के प्रति श्रद्धापूर्ण समर्पण, सदाचार, अनुशासन, समरस सह-अस्तित्व, आत्मसंयम, निस्वार्थ सेवा, लोककल्याण तथा अन्य जीवन मूल्यों पर आधारित हो। ऐसा वातावरण वेद छात्रों में भावनात्मक सुदृढता, सामाजिक संबद्धता तथा आन्तरिक सुअवस्था की भावना के विकास में सहायक होगा।

A.2 The Rashtriya Adarsh Veda Vidyalayas, the affiliated Veda Pathshalas and the affiliated Guru-Shishya Parampara Units shall endeavour to nurture an environment based on the moral values of reverential commitment to learning (विद्या के प्रति श्रद्धापूर्ण समर्पण), righteous and ethical conduct (सदाचार), discipline (अनुशासन), harmonious co-existence (समरस सह-अस्तित्व), self-regulation and restraint (आत्मसंयम), selfless service (निस्वार्थ सेवा), collective welfare (लोक कल्याण) etc., thereby strengthening Veda students' emotional resilience, social connectedness and inner wellbeing.

ख. प्रारम्भिक पहचान एवं सतत मार्गदर्शन

B. Early Identification and Continuous Mentoring

ख.१ गुरुकुल परम्परा के अनुरूप प्रत्येक छात्र गुरु-शिष्य परम्परा इकाई के गुरु, वेदाध्यापकों, आधुनिक विषयों के अध्यापकों, छात्रावास प्रतिपालकों तथा पर्यवेक्षकों के सतत शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन में रहेगा।

B.1 In accordance with the Gurukula tradition, every student shall remain under the continuous academic and personal guidance of GSP Unit Guru, Veda teachers, Modern subject teachers, hostel wardens and supervisors.

ख.२ वेद विद्यार्थियों के सुअवस्था की स्थिति की समय-समय पर व्यक्तिगत संवाद, मार्गदर्शन सत्रों तथा उनके शैक्षणिक, व्यवहारगत एवं सामाजिक संकेतकों के अनुवीक्षण के माध्यम से समीक्षा की जाएगी।

B.2 The wellbeing of Veda students' shall be periodically reviewed through personal interaction, mentoring sessions and observation of academic, behavioural and social indicators.

ख.३ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा ऐसी संस्कृति को प्रोत्साहित किया जाए, जिसमें मार्गदर्शन प्राप्त करना दुर्बलता अथवा कलंक का विषय न समझा जाए, बल्कि उसे परिपक्वता एवं आत्मविकास की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाए।

B.3 The RAVVs, the Veda Pathshalas, the GSP Units shall encourage a culture where seeking guidance is regarded as a sign of maturity and self-development rather than weakness or stigma.

ग. गुरु-शिष्य संबंध को सुदृढ करना

C. Strengthening the Guru–Shishya Relationship

ग.१ गुरु-शिष्य संबंध को वेद विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास के लिए प्राथमिक सहायक तंत्र के रूप में माना जाएगा।

C.1 The Guru–Shishya relationship shall be recognised as the primary support mechanism for Veda students' intellectual, emotional and moral development.

ग.२ गुरु/अध्यापक वेद विद्यार्थियों के साथ नियमित संवाद स्थापित करने का प्रयास करें तथा उन्हें अध्ययन, आचरण, व्यक्तिगत चुनौतियों एवं जीवन के लक्ष्यों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करें।

C.2 The Gurus/teachers shall endeavour to maintain regular dialogue with Veda students and provide guidance regarding studies, conduct, personal challenges and life goals.

ग.३ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा मार्गदर्शित स्वाध्याय सत्रों , संवाद-चक्रों, सत्संगों, सामूहिक परिचर्चाओं तथा सामूहिक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के मध्य सार्थक संवाद के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।

C.3 The RAVVs, the Veda Pathshalas, the GSP Units shall facilitate opportunities for meaningful interaction through guided Swadhyaya Sessions (self-learning sessions), Samvad-Chakra (Dialogue Circles) , Satsanga (value-based interaction sessions), group discussions and collective learning activities.

घ. विद्यार्थी सुअवस्था सहयोगकर्ता के रूप में छात्रावास प्रतिपालकों की भूमिका

D. Role of Hostel Wardens as Student Welfare Facilitator

वे निम्नलिखित दायित्वों का निर्वहन करेंगे :

Their role shall encompass the following:

i) वेद विद्यार्थियों के व्यवहार में होने वाले प्रारम्भिक परिवर्तनों, जैसे सामाजिक रूप से अलग-थलग रहना, अनियमित दिनचर्या, सहभागिता में कमी, भावनात्मक असंतुलन अथवा अन्य ऐसे संकेतकों की पहचान करना जिन पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता हो।

Identifying early behavioural changes in Veda students such as withdrawal, irregular routines, declining participation, emotional distress or other indicators requiring attention.

ii) वेद विद्यार्थियों को ऐसा अनौपचारिक, सहानुभूतिपूर्ण एवं पूर्वाग्रह मुक्त वातावरण प्रदान करना, जिसमें वे अपनी शैक्षणिक, व्यक्तिगत अथवा सामाजिक चिंताओं पर खुलकर संवाद कर सकें।

Providing an informal, empathetic and non-judgmental environment where Veda students may freely discuss academic, personal or social concerns.

iii) जहाँ आवश्यक हो, वहाँ परामर्श, चिकित्सीय सहायता अथवा अन्य पेशेवर सहयोगी सेवाओं तक समयबद्ध पहुँच सुनिश्चित करना।

Facilitating timely access to counselling, medical assistance or other professional support services wherever required.

iv) वेद विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, सुरक्षा एवं सुअवस्था को सुनिश्चित करने हेतु गुरुओं/अध्यापकों, माता-पिता/अभिभावकों तथा संस्थागत प्राधिकारियों के साथ सतत समन्वय स्थापित कर कार्य करना।

Working in close coordination with Gurus/teachers, parents/guardians and institutional authorities to ensure the holistic development, safety and wellbeing of Veda students.

v) छात्रावास प्रतिपालक (Hostle Wardens) वेद विद्यार्थियों के साथ नियमित एवं सार्थक संवाद बनाए रखें तथा छात्रावासीय जीवन की दैनिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करें। इस प्रकार की सहभागिता में भोजन के समय अनौपचारिक संवाद, सांस्कृतिक एवं मनोरंजनात्मक गतिविधियों में सहभागिता, सामूहिक आयोजनों में उपस्थिति तथा छात्रावास परिसर में समय-समय पर छात्रों के साथ संवादात्मक संवाद सम्मिलित किए जा सकते हैं। इसका उद्देश्य वेद विद्यार्थियों के साथ आत्मीयता, विश्वास एवं सहज संपर्क का वातावरण विकसित करना है, जिससे वे बिना किसी संकोच के मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त कर सकें तथा छात्रावासीय समुदाय के प्रति अपनत्व एवं संबद्धता की भावना का विकास हो सके।

Hostel Wardens shall maintain regular and meaningful engagement with Veda students by actively participating in the day-to-day residential life. Such engagement may include informal interactions during meals, participation in cultural and recreational activities, attendance at collective gatherings and periodic interactions within hostel premises. The objective shall be to develop familiarity, trust and approachability, enabling Veda

students to seek guidance and support without hesitation and fostering a sense of belonging within the hostel community.

ङ सहपाठी सहयोग तन्त्रों का सुदृढीकरण
E. Strengthening Peer Support Systems

ङ१ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा उपयुक्त वरिष्ठ वेद विद्यार्थियों को सहपाठी सहचर (Peer Mentor) अथवा विद्यार्थी दूत (Student Ambassador) के रूप में चिह्नित किया जा सकता है, ताकि वे अन्य वेद विद्यार्थियों, विशेषकर नवप्रवेशित वेद विद्यार्थियों को शैक्षणिक एवं आवासीय वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहयोग प्रदान कर सकें। इस प्रयोजनार्थ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों/वेद पाठशालाओं में अध्ययनरत वेद विभूषण प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों में अध्ययनरत वेद भूषण पंचम वर्ष के विद्यार्थियों का चयन किया जा सकता है।

E.1 The RAVVs, the Veda Pathshalas, the GSP Units may identify suitable senior Veda students (Veda Vibhushan 1st or 2nd Year students in case of RAVVs/Veda Pathshalas and Veda Bhushan 5th Year student in case of GSP Units) as Peer Mentors (सहपाठी सहचर) or Student Ambassadors (विद्यार्थी दूत) to assist fellow Veda students, particularly newly admitted Veda students, in adjusting to the academic and residential environment.

ङ२ ऐसे सहपाठी सहचर (Peer Mentors) अथवा विद्यार्थी दूत (Student Ambassadors) विद्यार्थियों में तनाव, सामाजिक एकाकीपन अथवा भावनात्मक कठिनाइयों के प्रारम्भिक संकेतों की पहचान करने के प्रति संवेदनशील बनाए जाएँ।

E.2 Such Peer Mentors or Student Ambassadors shall be sensitized to identify early signs of distress, social isolation or emotional difficulty.

च. आत्मीयता एवं अपनत्व की भावना का परिपोषण
F. Cultivating a Sense of Belonging

राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गु.शि.प इकाइयों द्वारा निम्नलिखित का आयोजन किया जा सकता है :
The RAVVs, the Veda Pathshalas, the GSP Units may organize the following :

- पर्व-उत्सवों का आयोजन
  Festival celebrations
- सामूहिक वैदिक मन्त्रपाठ एवं वेदपारायण
  Collective Vedic chanting and Veda Parayana
- योग एवं ध्यान सत्रों का आयोजन
  Yoga and meditation sessions
- सामूहिक प्रार्थना एवं शान्तिपाठ
  Collective Prarthna and Shanti Patha
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन
  Cultural programmes
- वेद विद्यार्थियों की उपलब्धियों का अभिज्ञान
  Recognition of Veda students' achievements

ये गतिविधियाँ आवासीय परिवेश में समुदाय-बोध, पारस्परिक विश्वास, सहयोग की भावना के विकास में सहायक सिद्ध होती हैं।
These activities foster a sense of community belonging (समुदाय-बोध), mutual trust (पारस्परिक विश्वास) and feeling of cooperation (सहयोग की भावना) within the residential community.

छ. वेद विद्यार्थियों के मानसिक एवं भावनात्मक विकास हेतु प्रतिष्ठान का विद्यादर्शन
G. Vidya Darshan of the Pratishthan for the Mental and Emotional Development of Veda Students

छ.१ वेद विद्यार्थियों का प्राथमिक उद्देश्य संबंधित वेदशाखा का कण्ठस्थीकरण, संरक्षण तथा परिशुद्ध सस्वर पाठ रहेगा। राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा वैदिक ग्रन्थों के व्यवस्थित अध्ययन, पाठ, पुनरावृत्ति एवं आत्मसात करने हेतु अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे सस्वर मौखिक परम्परा की निरन्तरता तथा भावी पीढ़ियों तक वैदिक ज्ञान के संरक्षण एवं संवहन को सुनिश्चित किया जा सके।
G.1 The memorization, preservation and proficient saswara recitation of the Veda Shakha concerned shall remain the primary objective of Veda students. The RAVVs, the Veda Pathshalas and the GSP Units shall provide an enabling environment for systematic study, recitation, revision and internalisation of the Vedic texts so as to ensure continuity of the saswara oral tradition and the transmission of Vedic knowledge to future generations.

छ.२ साथ ही, वेद विद्यार्थियों को आत्मानुशासन, आन्तरिक सुदृढता एवं उत्कृष्ट जीवन-मूल्यों के परिपोषण हेतु श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषदों, सुभाषितों तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्य प्रेरणादायी ग्रन्थों का नियमित अध्ययन, कण्ठस्थीकरण, पाठ एवं मनन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
G.2 Veda students may be further encouraged to regularly study, memorise, recite and contemplate on Shrimad Bhagavad Gita, Upanishads, Subhashitas and other inspirational texts of the Bharatiya Jnana Parampara for the cultivation of self-discipline, inner strength and noble values.

छ.३ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित *पञ्चकोश सिद्धान्त* से अभिप्रेरित होकर विद्यार्थियों के विकास हेतु समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाए। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत अन्नमय कोश (शारीरिक सुअवस्था), प्राणमय कोश (प्राणशक्ति एवं स्वास्थ्य), मनोमय कोश (भावनात्मक एवं मानसिक सुअवस्था), विज्ञानमय कोश (बौद्धिक विकास एवं विचक्षणत्व) तथा आनन्दमय कोश (आन्तरिक संतोष एवं आध्यात्मिक परिपूर्णता) के संतुलित विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए।
G.3 The RAVVs, the Veda Pathshalas and the GSP Units may adopt a holistic approach to Veda students' development inspired by the *Panchakosha Siddhant* described in the *Taittiriya Upanishad*, with due emphasis on the balanced development of the *Annamaya Kosha* (physical wellbeing), *Pranamaya Kosha* (vital energy and health), *Manomaya Kosha* (emotional and mental wellbeing), *Vijnanamaya Kosha* (intellectual development and discernment) and *Anandamaya Kosha* (inner contentment and spiritual fulfilment).

छ.४ अध्यापक एवं गुरु समय-समय पर वेद विद्यार्थियों के साथ चिंतनपरक संवादों का आयोजन कर सकते हैं, जिनमें *स्थितप्रज्ञ, आत्मसंयम, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग* तथा चरित्र-निर्माण, भावनात्मक परिपक्वता एवं संतुलित जीवन शैली के विकास में सहायक अन्य शिक्षाओं पर विचार-विमर्श किया जा सके।

G.4 Teachers and Gurus may periodically engage Veda students in reflective discussions (*Samvada*) on concepts such as Sthita-Prajna, Atma-Samyama, Karma Yoga, Bhakti Yoga, Jnana Yoga and other teachings conducive to character formation, emotional maturity and balanced living.

छ.५ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालायों तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा योग, प्राणायाम, ध्यान, सन्ध्या, अग्निकार्य तथा अन्य पारम्परिक विद्याओं के नियमित अभ्यास, जो मानसिक स्थिरता, भावनात्मक सुदृढ़ता, एकाग्रता तथा समग्र कल्याण के संवर्धन में सहायक होते हैं, को प्रोत्साहित किया जाए।

G.5 The RAVVs, the Veda Pathshalas and the GSP Units may encourage the regular practice of Yoga, Pranayama, Dhyana , Sandhya, Agnikarya and other traditional disciplines that promote mental composure, emotional resilience, concentration and overall wellbeing.

छ.६ वेद विद्यार्थियों को स्वाध्याय, मनन एवं आत्ममूल्यांकन की प्रवृत्तियों के प्रति मार्गदर्शित किया जाए, जिससे उनमें आत्म-जागरूकता, सकारात्मक चिंतन, नैतिक आचरण तथा व्यक्तिगत दायित्व की भावना का विकास हो सके।

G.6 Veda students may be guided towards the practices of Svadhyaya (self-study), Manana (reflection) and self-assessment so as to foster self-awareness, positive thinking, ethical conduct and a sense of personal responsibility.

छ.७ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों, वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों द्वारा श्रद्धा, सेवा, संयम आदि के शाश्वत मूल्यों पर आधारित गुरुकुलीय वातावरण के परिपोषण का सतत प्रयास किया जाए, जिससे वेद विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप बल मिल सके।

G.7 The RAVVs, the Veda Pathshalas and the GSP Units shall endeavour to nurture a Gurukula environment rooted in the eternal values of Shraddha, Seva, Sanyama etc., thereby supporting the holistic development of Veda students in accordance with the Bharatiya Jnana Parampara.

छ.८ प्रतिष्ठान के विद्या-दर्शन का परम उद्देश्य वेद विद्यार्थियों के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के समन्वित एवं संतुलित विकास का पथ प्रशस्त करना है, जिससे वे ज्ञान, सदाचार एवं लोकसेवा के आदर्शों से अनुप्राणित होकर उद्देश्यपूर्ण जीवन का निर्वहन कर सकें।

G.8 The ultimate objective of the Vidya Darshan of the Pratishthan is to facilitate the harmonious development of the body, mind, intellect and spirit, enabling Veda students to lead purposeful lives guided by wisdom, character and service to society.

1.7.2026

(प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल)
सचिव